OXFORD PUBLIC SCHOOL
AFFILIATED TO C.B.S.E. DELHI, SCHOOL CODE No: 8268
Pragati Path, Ranchi 834 001, Jharkhand
Website: www.oxfordpublicschool.net.in ; E-mail: oxfordpsranchi@rediffmail.com
Ph: 748596731

प्रेस विज्ञप्ति

ऑक्सफोर्ड पब्लिक स्कूल में प्रख्यात वैज्ञानिक और विशिष्ट शिक्षाविद् डॉ. के. कस्तूरीरंगन को श्रद्धांजलि अर्पित

राँची, 2 मई, 2025

आज ऑक्सफोर्ड पब्लिक स्कूल, प्रगति पथ, राँची में एक विशेष प्रार्थना सभा का आयोजन प्रख्यात वैज्ञानिक, शिक्षाविद् और आधुनिक भारत की शिक्षा सुधारों के शिल्पकार डॉ. कृष्णास्वामी कस्तूरीरंगन (24 अक्टूबर 1940 - 25अप्रैल 2025) को श्रद्धांजलि अर्पित करने और उनके योगदान को स्मरण करने हेतु किया गया। कक्षा 9 की अनुष्का राज और अंशिका चौरसिया ने क्रमशः हिंदी और अंग्रेजी में डॉ. के. कस्तूरीरंगन के जीवन परिचय, उपलब्धियों, सम्मान और उनके उल्लेखनीय योगदान को उजागर किया और कहा कि डॉ. कृष्णस्वामी कस्तूरीरंगन ने भारत के विकास के दो महत्वपूर्ण स्तंभों: अंतरिक्ष अन्वेषण और शिक्षा पर अपनी अमिट छाप छोड़ी। 24 अक्टूबर, 1940 को केरल के एर्नाकुलम में जन्मे डॉ. कस्तूरीरंगन का जीवन बौद्धिक दृढ़ता, दूरदर्शी नेतृत्व और राष्ट्र निर्माण के प्रति अटूट प्रतिबद्धता का प्रमाण था। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के वास्तुकार के रूप में, समग्र, समावेशी और दूरदर्शी शिक्षा के लिए एक दृष्टि से प्रेरित शिक्षा में उनके योगदान ने भारत के शैक्षिक परिदृश्य को नया रूप दिया है। अंतरिक्ष विज्ञान में उनकी शानदार उपलब्धियों से परे, शिक्षा नीति निर्माण और संस्थागत नेतृत्व में कस्तूरीरंगन की भूमिका राष्ट्रीय विकास के लिए ज्ञान और नवाचार को बढ़ावा देने के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाती है। प्रारंभिक जीवन और वैज्ञानिक प्रतिष्ठा एक विलक्षण विद्वान, डॉ. कस्तूरीरंगन ने बॉम्बे विश्वविद्यालय से भौतिकी में ऑनर्स के साथ विज्ञान स्नातक और मास्टर ऑफ साइंस की डिग्री प्राप्त की और डॉ. विक्रम साराभाई के मार्गदर्शन में अहमदाबाद के भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला में काम करते हुए 1971 में प्रायोगिक उच्च ऊर्जा खगोल विज्ञान में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। इसरो के अध्यक्ष (1994-2003) के रूप में, उन्होंने ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान (PSLV) के संचालन और भारत के पहले चंद्र मिशन की अवधारणा सहित ऐतिहासिक उपलब्धियों का नेतृत्व किया। कस्तूरीरंगन के समय में ही इसरो ने आत्मनिर्भरता और स्वदेशीकरण के क्षेत्र में एक लंबी छलांग लगाई।

डॉ. कस्तूरीरंगन इंटरनेशनल एकेडमी ऑफ एस्ट्रोनॉटिक्स के एकमात्र भारतीय मानद सदस्य और पूर्व उपाध्यक्ष थे। उन्होंने विश्व विज्ञान अकादमी (TWAS), कार्डिफ़ विश्वविद्यालय और पोंटिफ़िकल एकेडमी ऑफ़ साइंसेज सहित वैश्विक संस्थानों से फ़ेलोशिप और मानद उपाधियाँ प्राप्त कीं। उन्हें ब्रॉक मेडल, एलन डी एमिल मेमोरियल अवार्ड और थियोडोर वॉन कार्मन अवार्ड जैसे प्रतिष्ठित पुरस्कार मिले।

उनकी वैज्ञानिक कुशलता ने उन्हें भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान- पद्मश्री, पद्मभूषण और पद्मविभूषण से सम्मानित किया। शैक्षिक नेतृत्व में परिवर्तन अंतरिक्ष विज्ञान से परे, डॉ. कस्तूरीरंगन ने शिक्षा को सामाजिक प्रगति की आधारशिला के रूप में मान्यता दी। उन्होंने नीति-संचालित शैक्षिक सुधारों की वकालत करते हुए राज्यसभा सदस्य (2003-09) के रूप में कार्य किया। उनकी समग्र दृष्टि ने वैज्ञानिक जाँच को मानवतावादी शिक्षा के साथ मिश्रित किया, जिसमें समानता, नवाचार और अंतःविषय सोच पर जोर दिया गया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के निर्माण में नेतृत्व 2017 में नियुक्त, उन्होंने शिक्षकों, वैज्ञानिकों, उद्योग निकायों और सामुदायिक प्रतिनिधियों को शामिल करते हुए जमीनी स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक व्यापक परामर्श के माध्यम से नौ

सदस्यीय पैनल का नेतृत्व किया। जुलाई 2020 में शुरू की गई परिणामी नीति ने भारत को ज्ञान की महाशक्ति बनाने के उद्देश्य से महत्वपूर्ण सुधार पेश किए।

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने इस नीति की सराहना 21वीं सदी के भारत की नींव के रूप में की है। अकादमिक नेतृत्व और विरासत नीति से परे, कस्तूरीरंगन का योगदान शैक्षणिक संस्थानों को आकार देने तक बढ़ा। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (JNU) के कुलाधिपति के रूप में, उन्होंने अकादमिक उत्कृष्टता और शासन को प्रभावित किया। उन्होंने कर्नाटक ज्ञान आयोग की अध्यक्षता भी की प्रधानमंत्री द्वारा उल्लेखित युवा वैज्ञानिकों और शिक्षकों को कस्तूरीरंगन की सलाह ने एक पीढ़ी को ज्ञान-संचालित करियर अपनाने के लिए प्रेरित किया। केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान ने उन्हें एक "बौद्धिक दिग्गज" और मार्गदर्शक प्रकाश कहा। इसरो से शिक्षा नीति में अपनी वैज्ञानिक दृढ़ता और रणनीतिक दृष्टि का अनुवाद करने की उनकी क्षमता ने सुनिश्चित किया कि एनईपी 2020 वैश्विक आकांक्षाओं को संबोधित करते हुए भारत के सांस्कृतिक मूल्यों में निहित थी। एनईपी 2020, जो अब कार्यान्वयन में है, उनकी दूरदर्शिता के लिए एक जीवंत श्रद्धांजलि है। शैक्षिक समानता के साथ वैज्ञानिक प्रगति को जोड़कर, उन्होंने ज्ञान से प्रेरित भारत की नींव रखी। सहकर्मी उनकी विनम्रता, बौद्धिक उदारता और पीढ़ियों को प्रेरित करने की क्षमता को याद करते हैं। उनकी स्मृति का सम्मान करते हुए, हम उनके द्वारा समर्थित आदर्शों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करते हैं- सशक्तिकरण के रूप में शिक्षा, एक सामाजिक शक्ति के रूप में नवाचार और परिवर्तन की यात्रा के रूप में आजीवन सीखना। डॉ. कस्तूरीरंगनका जीवन हमें याद दिलाता है कि सच्ची महानता ज्ञान के माध्यम से दूसरों को ऊपर उठाने में निहित है, और उनका योगदान एक प्रबुद्ध भविष्य की ओर मार्ग को रोशन करना जारी रखेगा

प्रधानाचार्य रंजीत कुमार ठाकुर ने अपने संबोधन में उनके करिश्माई व्यक्तित्व, प्रारंभिक जीवन, शिक्षा, वैज्ञानिक प्रसिद्धि पर प्रकाश डाला और अंतरिक्ष अनुसंधान एवं एनईपी 2020 के प्रारूपण में उनकी अद्भुत भूमिका को विस्तारपूर्वक बताया। यह एनईपी 2020 इस सदी की पहली राष्ट्रीय शिक्षा नीति है जो राष्ट्र की आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं के अनुरूप नवाचार, वैज्ञानिक, रचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक सोच पर बल देती है जिसके सहारे हम विश्वगरु के रूप में विश्व का मार्गदर्शन कर सकते हैं। साथ ही प्रधानाचार्य ने छात्रों को उनके प्रेरणादायी जीवन से सीख लेकर सर्वांगीण विकास के लिए प्रयासरत रहने एवं समाज और राष्ट्र के लिए योगदान देने का आह्वान किया।

इस गरिमामय अवसर पर शैक्षणिक निदेशिका डॉ. सिमी मेहता, शैक्षणिक समन्वयक रवि शेखर, जूनियर विंग प्रभारी राजकिशोर शर्मा, प्रार्थना सभा प्रभारी नैंसी रोजी सिंह, शिक्षकगण और छात्र उपस्थित थे।

OXFORD PUBLIC SCHOOL

AFFILIATED TO C.B.S.E. DELHI, SCHOOL CODE No: 8268
Pragati Path, Ranchi 834 001, Jharkhand
Website: www.oxfordpublicschool.net.in ; E-mail: oxfordpsranchi@rediffmail.com
Ph: 748596731

Press Release

Tribute Paid To Eminent Scientist And Distinguished Educationist Dr. K. Kasturirangan at Oxford Public School

Ranchi, 2nd May, 2025

Today a special assembly was organised at Oxford Public School, Pragati Path, Ranchi to pay tribute and commemorate the contribution of Dr. Krishnaswamy Kasturirangan (24th October, 1940 – 25th April, 2025), an eminent scientist, educator and architect of modern India's education reforms who left an indelible mark on the two critical pillars of India's growth: Space Exploration and Education. Anushka Raj and Anshika Chourasia of Std. 9 highlighted the life history, achievements, accolades and remarkable role of Dr. R. Kasturirangan in their speeches in Hindi and English respectively and stated that Dr. Krishnaswamy Kasturirangan was born on October 24, 1940, in Ernakulam, Kerala. His life was a testament to intellectual rigor, visionary leadership, and an unwavering commitment to nation-building. As the architect of the National Education Policy (NEP) 2020, his contributions to education, driven by a vision for holistic, inclusive, and forward-looking learning, have reshaped India's educational landscape. Beyond his stellar achievements in space science, Kasturirangan's role in education policy formulation and institutional leadership reflects his commitment to fostering knowledge and innovation for national development.

A prodigious scholar, Dr. Kasturirangan took his Bachelor of Science with Honours and Master of Science degrees in Physics from Bombay University and received his Doctorate Degree in Experimental High Energy Astronomy in 1971 working at the Physical Research Laboratory, Ahmedabad, under the mentorship of Dr. Vikram Sarabhai. As ISRO Chairman (1994–2003), he spearheaded landmark achievements, including the operationalization of the Polar Satellite Launch Vehicle (PSLV) and India's first lunar mission concept. It was during Kasturirangan's time that ISRO embarked on self-reliance and indigenization, which eventually paid off handsomely in creating in-house capabilities.

Dr. Kasturirangan was the only Indian honorary member and former Vice President of the International Academy of Astronautics. He held fellowships and honorary titles from global institutions, including the World Academy of Sciences (TWAS), Cardiff University, and the Pontifical Academy of Sciences. He received prestigious awards like the Brock Medal, Allan D Emil Memorial Award, and Theodore von Karman Award. His scientific acumen earned him India's highest civilian honours-Padma Shri, Padma Bhushan, and Padma Vibhushan.

Beyond space science, Dr. Kasturirangan recognized education as the cornerstone of societal progress. He served as a Rajya Sabha member (2003–09), advocating for policy-driven educational reforms. His holistic vision blended scientific inquiry with humanistic learning, emphasizing equity, innovation, and interdisciplinary thinking.

Dr. Kasturirangan's most significant contribution to education was his role as the Chairman of the committee tasked with drafting the NEP 2020, a transformative policy that replaced the 1986 National Policy on Education. Appointed in 2017, he led a nine-member panel through extensive consultations across grassroots to national levels, engaging teachers, scientists, industry bodies, and community representatives. The resulting policy, launched in July 2020, introduced groundbreaking reforms aimed at making India a knowledge superpower. His emphasis on interconnectedness linking school to higher education for cohesive learning has been widely praised, with Prime Minister Narendra Modi lauding the policy as a foundation for 21st-century India.

Kasturirangan's contributions extended to shaping educational institutions. As Chancellor of Jawaharlal Nehru University (JNU), he influenced academic excellence and governance. He also chaired the Karnataka Knowledge Commission, advocating for teacher professionalization and comparing their role to that of engineers. His tenure as Director of the National Institute of Advanced Studies (NIAS), Bengaluru (2004–2009), and Chancellor of the Central University of Rajasthan and NIIT University furthered interdisciplinary research and innovation in education. Kasturirangan's mentorship of young scientists and educators, noted by the Prime Minister, inspired a generation to pursue knowledge-driven careers.

Union Education Minister Sh. Dharmendra Pradhan called him an "intellectual titan" and a guiding light. His ability to translate his scientific rigor and strategic vision from ISRO to education policy ensured that the NEP 2020 was rooted in India's cultural values while addressing global aspirations.
The NEP 2020, now in implementation, stands as a living tribute to his foresight. By bridging scientific advancement with educational equity, he laid the groundwork for a knowledge driven India. Colleagues recall his humility, intellectual generosity, and ability to inspire generations. In honouring his memory, we reaffirm our commitment to the ideals he championed education as empowerment, innovation as a societal force, and lifelong learning as a journey of transformation. Dr. Kasturirangan's life reminds us that true greatness lies in lifting others through knowledge, and his contributions will continue to illuminate the path toward an enlightened future

The Principal Ranjeet Kumar Thakur, in his address, threw light on his charismatic personality, early life, education, scientific eminence, transition to educational leadership and elaborated his incredible role in Space Research and drafting the NEP 2020 which is the first National Education Policy of the 21st century as per the needs and aspirations of the nation which focuses on innovation, critical and analytical thinking with multidisciplinary approach to make the nation a world leader in education sector. Further, the Principal exhorted the students to learn lessons from his inspiring life for holistic development and contribute to the society and the nation.

On this august occasion, Dr. Simi Mehta, the Academic Director, Ravi Shekhar, the Academic Coordinator, Rajkishore Sharma, the Junior Wing In-Charge, Nancy Rosy Singh, the Assembly In-Charge, all the teachers and students were present.